एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 05 (नवम्बर-दिसम्बर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बकरी पालन की आर्थिकी

(*डॉ. पंकज लवानिया[1] एवं डॉ. कैलाश चंद्र बैरवा[2])
[1]सहायक प्राध्यापक (पशुपालन), कृषि महाविद्यालय, (कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर) जोधपुर
[2]सहायक प्राध्यापक (कृषि अर्थशास्त्र), कृषि महाविद्यालय, (कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर) बायतु-बाडमेर
*lawaniap@yahoo.com

पशुपालन के अन्तर्गत बकरी पालन की भूमि का अति महत्वपूर्ण है। क्योंकि लघु, सीमान्त, भूमिहीन कृषक इस उद्यम से जुडे है। बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है, जो विशेष रूप से उन ऊपजाऊ जमीन एवं कम वर्षा क्षेत्रों में बकरी व्यवसाय लाभकारी है। ग्रामीण अंचल का बहुत बडा वर्ग आय के लिऐ एवं कुछ मात्रा में मांच व दूध के घरेलू उपयोग हेतू बकरी पालन पर निर्भर रहता है। भारतीय बकरियाँ प्राकृतिक चारागाहों पर निर्भर रहती है, इसके लिऐ इनके मांस में पेस्टीसाइड, कीटनाशक रसायनों की संभावना बहुत कम रहती है। साथ ही भारतीय बकरियों का मांस अधिक स्वादिष्ट होता है, जो कि वसा व ऊर्जा संवेदी उपभोक्ताओं द्वारा अधिक पसन्द किया जाता है। इसलिऐ बकरी के उत्पादों (मांस व दूध) की मांग अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बढ रही है। बकरी पालन को केवल एक सहायक व्यवसाय के रूप में ही नहीं बल्कि एक अच्छी संभावना वाले मुख्य व्यवसाय के रूप में देखा जा रहा है। इस व्यवसाय में लगाई पूँजी पर लगभग 30–35 प्रतिशत की दर से आय प्राप्त हो सकती है।

बकरी पालन रोजगार का उपयोगी विकल्प है, कम पूँजी से प्रारम्भ होने वाला यह व्यवसाय डेयरी फार्म की तुलना में कम जोखिम व अधिक लाभ देता है। वर्तमान समय में बढती हुई मंहगाई, जब गाय व भैसों की कीमत व उनके पालने का खर्च बहुत अधिक है, बकरी पालन ग्रामीण बेरोजगारों के लिये रोजगार का अच्छा साधन सिद्ध हो सकता है। बकरी को सभी वर्ग व जाति के लोग पालते है व इसके मांस खाने पर भी कोई धार्मिक निषेधता नहीं है। पिछले कुछ वर्षो में बकरी मांस का बाजार मूल्य बहुत तेजी से बढा है, जो कि 100–150 रूपये प्रति किलो से बढकर 250–300 रूपये प्रति किलो तक पहुँच गया है। इसके चलते बकरी पालन और अधिक लाभकारी विकल्प के रूप में उभरा है। इसलिए वर्तमान समय में बकरी पालन को एक सहायक व्यवसाय के रूप में ही नही बल्कि एक अच्छी संभावनाओं वाले मुख्य व्यवसाय के रूप में देखा जा रहा है। इस व्यवसाय में लगी पूँजी पर लगभग 30 प्रतिशत वार्षिक दर से आय प्राप्त हो सकती है। अतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर बकरी पालन सघन या अर्धसघन पद्धति के अन्तर्गत एक लाभकारी व्यवसाय के रूप में अपनाया जा सकता है।

यदि 100 बकरी की परियोजना पर 5 वर्ष में आने वाली लागत व प्राप्त होने वाली आय के आधार पर आर्थिक पश्लिेषण करे तो हम देखते है कि बकरी पालक सभी लागत जैसे पूँजी पर ब्याज, चारा, दाना, दवाईयाँ, मजदूरी, बिजली, पानी, बीमा व अन्य सभी खर्चो को बकरी पालन से प्राप्त आय में से घटाकर प्रति वर्ष लगभग एक लाख पचास हजार रूपये तक शुद्ध आय प्राप्त कर सकता है। यदि बकरियाँ अर्ध–सघन पद्धति के तहत् पाली जाये तो व 50 प्रतिशत चारा बिना किसी लागत के सार्वजनिक चारा स्त्रोंतों से प्राप्त हो तो 100 बकरी की इकाई से एक वर्ष में लगभग 1 लाख 80 हजार रूपये तक की शुद्ध आय प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त पारम्परिक पालन व्यवसाय, जिसमें बकरियाँ चारे के लिऐ केवल सार्वजनिक चारा स्त्रोतों पर निर्भर करती है, में भी किसान 100 बकरी की इकाई से 65 वर्ष में लगभग 1 से 1 लाख 25 हजार तक शुद्ध आय प्राप्त कर सकता है।

सारणी 1: 100 (बकरी) व 5 बकरों की ईकाई की आर्थिकी

अ. पूँजी लागत			
1.	भूमि	:	एक सौ बकरियों का फार्म शुरू करने के लिये 1000 वर्ग मीटर भूमि की आवश्यकता बाडे/आवास आदि के लिये चाहिये। ढका स्थान 500 तथा खुला स्थान 1000 वर्ग मीटर की आवश्यकता होगी।
2.	बकरीयों के आवास व अन्य ढाँचें	:	2,00,000 रूपये
3.	उपकरण	:	40,000 रूपये
4.	प्रजनन पशु	:	1,92,500 रूपये
	कुल पूँजी लागत	:	4,32,500 रूपये
ब. पूँजीकृत चालू लागत			
1	प्रथम 12 माह की चालू लागत पर	:	1,87,438 रूपये
स. परियोजना लागत			
1.	पूँजीगत लागत	:	4,32,500 रूपये
2.	पूँजीगत चालू लागत	:	1,87,438 रूपये
	कुल पूँजी लागत	:	6,19,938 रूपये
1.	स्वंय का अंश (15 प्रतिशत)	:	95,000 रूपये
2.	शुद्ध बैंक ऋण	:	5,24,938 रूपये
	ऋण अदायगर की अवधि	**:**	**5 वर्ष**

सारणी 2: बकरी पालन पर आने वाली चालू लागत (रू./वर्ष)

वर्ष	चारा–दाना लागत	अन्य खर्च: श्रम, टीके, दवा, बीमा, विद्युत, मरम्मत आदि।	पूँजीकृत चालू लागत घटाने पर	शुद्ध चालू लागत
1.	119898	67540	187438	–
2.	145141	110470	–	255611
3.	159655	111342	–	270997
4.	174024	122104	–	296128
5.	**188635**	**122180**	**–**	**310815**

बकरी पालन पर आने वाली लगात का सबसे बडा भाग चारे व दाने पर खर्च होता है व लागत का दूसरा मुख्य भाग–मजदूरी पर खचे। इसके अतिरिक्त बीमा, दवा व टीके आदि पर भी लागत आती है। बकरी पालन पर लागत कम आये, इसके लिये जरूरी है, चारे–दाने ऐसे उपयोग में लाये जाये जो किसान के पास या गांव में भी आसानी ये उपलब्ध हो सके।

सारणी 3: बकरी पालन से आय (रू.)

वर्ष	दूध से आय	बकरी के बच्चों से आय		विस्तापित नर व मादा	खाल	खाद	अंतिम वर्ष में प्रजनक पशुओं का मूल्य	कुल
		नर	मादा					
स	43200	0	0	0	1200	18750	0	63150
स	86400	171200	119880	25000	2400	22500	0	427380
स	88128	298800	174960	53000	1224	2300	0	639112
स	88128	295400	174960	72000	2496	24000	0	655984
स	**89890**	**311400**	**174960**	**25000**	**1248**		**148000**	**774498**

दुग्ध उत्पादन: 80 लीटर/बकरी/ वर्ष, दर रूपये 12/– लीटर

बकरी पालन व्यवसाय से प्राप्त आय का मुख्य भाग बकरी के बच्चों को तैयार कर बाजार में मांस के लिये या बकरी पालकों को बेचने से प्राप्त होती है। इसके साथ–साथ बकरियों के दुध, खाद व मरे पशुओं की खाल से भी आय प्राप्त होती है। प्रथम वर्ष में केवल दूध, खाद, मरे बच्चे की खाल प्राप्त होती है। प्रथम वर्ष में पैदा बच्चे दूसरे वर्ष में ही बेचने की उम्र, जो कि कम से कम 7–8 माह पर पहुँच जायेंगे। बच्चे/बडें बच्चे फार्म पर रूपये 85/– प्रति किलोग्राम शरीर भार 8 माह की आयु पर औसत शरीर भार नर 20 किलोग्राम व मादा 18 किलोग्राम। त्यौहारों पर नर बच्चो का मूल्य रूपये 110 प्रति किलोग्राम शरीर भार, विस्थापित पशुओं का मूल्य रूपये 50/– प्रति किलोग्राम शरीर भार, खालः वयस्क रूपये 150/– खाल, बच्चे रू. 75/– खाल, खाद : 100 किलोग्राम/वयस्क बकरी/वर्ष, रूपये 1000 टन।

सारणी 4: ऋण अदायगी व बकरी पालन से शुद्ध आय (रू.)

क्र.स.	विवरण	वर्ष					कुल
		1	2	3	4	5	
1.	कुल आय	63150	427380	639112	655984	774498	2560124
2.	कुल लागत	–	255611	270997	296128	310815	1133551
3.	शुद्ध आय (1–2)	63150	171769	368115	359856	463683	1426573
4.	मूलधन वापसी	–	100000	141646	141646	141646	524938
5.	ब्याज अदायगी (12%) वार्षिक दर	–	62992	50993	33995	16997	134977
6.	कुल अदायगी (4+5)	–	162992	192639	175641	158643	689915
7.	**शुद्ध (3–6) बचत**	**63150**	**8777**	**175476**	**184215**	**305040**	**736658**

वर्तमान 100 बकरी की ईकाई प्रारम्भ करने पर कुल रूपये 4,32,500 आरम्भिक स्थायी लागत आती है। यदि प्रथम वर्ष की चालू लागत को पूँजीकृत लागत के रूप में ले तो कुल परियोजना लागत रूपये 6,19,938 होगी। कुल आरम्भिक पूँजी का 15 प्रतिशत बकरी पालक द्वारा लगाने पर शुद्ध बैंक ऋण रूपये 5,24,938 होता है। इस योजना से 5 वर्ष की नियोजन अवधि में मूलधन व ब्याज की अदायगी करने के बाद कुल रूपये 7,36,658 की शुद्ध आय प्राप्त होगी। जिससे रूपये 1,47,311 शुद्ध बचत प्रति वर्ष व रूपये 12,28 शुद्ध बचत प्रति माह प्राप्त होगी।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि व्यवसायिक बकरी पालन किसानों, भूमिहीनों, शिक्षित व अशिक्षित बेरोजगारों के लिये ग्रामीण परिवेश में रोजगार व आय का एक अच्छा व आसान स्त्रोत हो सकता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि बकरी पालन के तहत् रोजगार एवं आय के साधन के रूप में बढावा दिया जाये। आम तौर पर बकरियाँ पारम्परिक तौर पर सामुदायिक चारा स्त्रोत व चारागाह जिस पर निर्भर रहती है, वो कम होते जा रहे है, इसलिए भविष्य में बकरी उत्पादों की लगातार गढती मांग को पूरा करने जरूरी है कि बकरी पालन सघन या अर्ध सघन पद्धति के तहत् किया जाये।